

नव द्वीप में नाथु

६४

दह दीहँ श्री जगदीश में, रहिया जौक सां जानी ।
 कलकतो घुमीं नवद्वीप में, आया साहिब सैलानी ॥
 नीह नगर नवद्वीप आ, जणु बृन्दाबनु नवीनु ।
 जिते चैतन्य महाप्रभू, प्रगटु थियो प्रवीनु ॥
 पूरब में पावनु वहे, सुन्दर सुरसरि धार ।
 शहर में कीर्तन गंगा, वहे सदा सुख सार ॥
 भजनाश्रम में भाव वसि, रहियुमि अची राणो ।
 कुरिब भरियो कीर्तनु . बुधी, आनन्द अघाणो ॥
 सोरहँ सव देवियूं उते, कनि कीर्तन किलकार ।
 अठ कलाक आनन्द जी, मचे हर्ष हुब्रकार ॥

नाम धुनि सां गूंजण लगो, नदिया जो आकाशु ।
 जणु किलकारियूं दिए कुरिब सां, पसी साईअ सहवासु ॥
 साई बि कीर्तन रंग में, झूमें रैं गाए ।
 प्रेम जे मधुर आंसुनि सां, पहिंजो चोलड़ो भिजाए ॥
 मिठल मैगसिचन्द जो, उहो रूपु मनोहरु ।
 प्राणनि खे प्यारो लगे, सोभारो सुन्दरु ॥
 संधि सुबुह सनेह जे, सिन्धु में करिनि स्नानु ।
 ध्याईनि सदां दिलि में, श्री आरियलि अमां जान ॥
 जीअँ गौरांग वृषभनुजा, जे विरिह जो ध्यानु धरे ।
 तीअँ निमिनन्दिनि जे नेह जो, कामिलु क्यासु करे ॥
 ब्रई पूर्णु प्रेम में, ब्रई महाभाव मस्तानु ।
 बिन्हीं विरिह व्यथा में, सर्वसु कयो कुलबानु ॥
 बिन्हीं जो लक्षु विरिह जे, उत्कण्ठा जो पानु ।
 पर विह्लु श्री गौरांग आ, साई आ सावधानु ॥
 बिन्हीं जे संभाल जो, आहे इष्ट खे ध्यानु ।
 बिन्हीं जो पावनु प्रेमड़ो, आहे प्रीतम वटि परिवानु ॥
 हिक्कु शचीनन्दनु सुकुमारिड़ो, ब्रियो सुखदेवी सुवनु सुजानु ।
 हिक बहारी कई बंगाल में, ब्रिए सिन्धु वधायो शानु ॥
 ब्रई प्यासा प्रेम जा, बिन्हीं मिठो गुण गानु ।
 ब्रई सत्संग सिकाइता, ब्रई वीर अथमि विद्वान ॥
 ब्रई कीर्तन कला में कुशलु, ब्रई अनुरागियुनि अगवान ।
 ब्रई प्रतिष्ठा खां परे, ब्रई निःस्पृह नेष्ठावान ॥

ब्रई आचार्य अलबेलड़ा, ब्रई प्रेमु चवनि प्रधानु ।
 ब्रई द्वैत में अद्वैत जो, माणीनि रसु महानु ॥
 हिक नीलाचल निवासु कयो, ब्रिए वसायो बनराजु ।
 हिक जो इष्टु मन मोहनु, ब्रिए जो श्री रघुराजु ॥
 गुणनिधि श्री गौरांग जे, गांव जो दरसु करे ।
 पसी उहे प्रेम भावड़ा, साईं ठाकुर सांगु ठरे ॥
 भजनाश्रम में भजन जी, राति दीहाँ वहे सीर ।
 नचनि गाईनि नीह भरिया, भुलाए सुधि शरीर ॥
 साराहिण योग्यु तिनि जो, अतिथियुनि जो सत्कारु ।
 मिठो बोलीनि निउड़त सां, रही सेवा में होश्यारु ॥
 साहिब मिठनि सारे मण्डल जो, कयो तांहिरीअ भण्डारो ।
 विहांव वांगियां उत्सवु थियो, सारो दिहाड़ो ॥
 उन आश्रम जो मुनीबु हो, श्रद्धावन्तु सचारु ।
 पर मुंझलु हो मार्ग में, लहे न दिलि करारु ॥
 दर्शन सां दिलिबर जे, अंदरि थियुसि उत्साहु ।
 अरिदास कयाई अनुराग सां, रहिबर दसि को राहु ॥
 बुधायाई पहिंजो हालिड़ो, जो अगे मिलियुसि उपदेशु ।
 सो कठिनु मार्गु साधन जो, करे न मनु प्रवेशु ॥
 मुंझलनि खे दिए मागिड़ो, मालिकु मीरपुरि मीरु ।
 रसाए राह भुलियनि खे, सतिगुरु शेरु सुधीरु ॥
 समुझायाऊँ साधक खे, जुगति सां जोड़े ।
 हलु हिये सां होत दे, मनु अन्दरि मोड़े ॥

पहिरिणं मिलियल उपदेश खे, करे सुगमु संवारियो ।
 श्रद्धा हैं सनेह जो, सबकु सेखारियो ॥
 गद् गद् थियो दिलि में, पसी महिर मुनीबु ।
 कृपा दिसी कामिल जी, आनन्दु थियुसि अजीबु ॥
 अबल चयुसि पहिंजे सतिगुर में, रखिजि सिक सची ।
 असांखे भी आशीश कजि, रहूँ रंग रची ॥
 सरलु सुभाउ साहिब जो, मुनीब मन भायो ।
 ज़ाताई गौरांगु ज़णु, रूपु धरे आयो ॥
 महिर परिवर मालिक मिठा हीणनि जा हमराह ।
 साई शाहनि शाह, गरीबिश्रीखण्डि गुण निधी ॥

६५

श्री नवद्वीप में नींह भरियो, सन्तु हो बंसीदासु ।
 जहिंजो यारिहीअं भगति में, बिनां जतन हो वासु ॥
 जहिंजी महिमा मालिक बुधी, जागियमि दरस प्यास ।
 श्रद्धा हैं सनेह सां, आया तहिं आवास ॥
 श्री गंगा जे तीर ते, तहिं सदनु सोभारो ।
 विहे ठाकुर अगियां, सारो दिहाड़ो ॥
 नंढिड़े सिंघासण ते, बिराजमान सरिकार ।
 पर वस्त्र पहिरियल कीनकी, रुगी श्रद्धा सिक अपारु ॥
 हुको छिके वेठो मौज सां, रांझनु रीझाए ।
 आंसू वहाए अनुराग सां, मधुर सुर गाए ॥

हरी भक्तवत्सल ! जी, हर हर लाति करे ।
 सनेह भरिए समाज जो, वेठो ध्यानु धरे ॥
 दिलिबर अची दरीअ खां, तहिंजो दरसु कयो ।
 वाह रसीलो सन्तु आ, गद् गद् कण्ठ चयो ॥
 बाहिरि बिनि प्रेमियुनि पिए, ढोलक वजाई ।
 हरी नाम कीर्तनु करे, मौजिड़ी मचाई ॥
 पर सन्तु त पहिंजी मौज में, हुओ मगनु मतवालो ।
 बाहिरि जग जे भास खां, देई छदियाई तालो ॥
 हिक दास चयो सन्त जो, कहिड़ो रंगु आहे ।
 सेवा करे ठाकुर जी, पर पट न पहिराए ॥
 साहिबनि चयो पुष्टु सन्त खां, त कहिड़ो धारीं भाउ ।
 साई मिठिड़े बोल जो, तहिंजे पियो कनि परिलाउ ॥
 मौज में बोलण लगो, सो सन्तु त सुखकारी ।
 पहिरे पीत पट नीलम साड़ी, रतन सिंघासन प्रीतम प्यार ॥
 बुधी सन्त जा बालिड़ा, थियो साई अ मन आनन्दु ।
 चयो परा प्रेम मगनु आ, सनेही सुखकन्दु ॥
 वरी मालिक आज्ञा सां, सेवक श्लोकु गायो ।
 श्री मुख सां भगुवन्त जो, नारद बुधायो ॥
 नाह्म वसामि वैकुण्ठे योगीनां हृदय न च ।
 मद् भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः ॥
 गाईनि प्रेमी था जिते, उते वसां थो आउं ।
 उहो मुहिंजो निजु महल आ, जन्म भूमि जो गांउं ॥

उहाई भूमि विहार जी, उहो रसीलो ठाउं ।
जिनि जाहिरु कयुमि नाँउ, किशिनु करिजी तिनि जो ॥

६६

इहो श्लोकु .बुधी सन्त जे, जागियो मन उत्साहु ।
चयाई गद् गद् कण्ठ सां, भक्त वच्छल वाह वाह ॥
कुण भक्त तोरे किशिन, कोथा वे प्रेमी ।
जिन कोले वसीं चित चोरिया, हइयाछे नेमी ॥
.गुझिड़ो वचनु किशिन चयो, .बुधु बाबा बंसी दास ।
से तोर दर्शन आये छे, सरल सनेहेर राश ॥
गुण निधि गोकल चन्द्र जइहिं, चाह मां चितायो ।
निहारे बाबल वीर दे, महबती मुश्कायो ॥
मुश्कान आ अँमृत छटा, सन्तनि सापुरुषनि ।
सो सनेह सिन्धु मगनु थिए, जहिं ते वर्षा कनि ॥
साई सुधा सिन्धु आ, सन्त मुश्कणु चन्द्र समान ।
वीरि आई रस राज जी, उर आनन्द उमंगान ॥
सखी साई साहिब मिठा, लिकल लाहूती लाल ।
जहिंजे नेणनि घरिड़ो कयो, दानी दशरथ बाल ॥
कननि में कीरति सुधा, कौशल चन्द्र कृपाल ।
रसना रांझन रस में, तरे पेई त्रिकाल ॥
मन वाणीअ खां जो परे, सो वसायो मन वाणी ।
सजण मुकी साकेत खां, श्री कोकिलि राणी ॥

सन्तनि दर्शन सुख खे, सचो साईं सुजाणे ।
 सन्तनि सत्य प्रसाद जो, मजो नितु माणे ॥
 उतां हलियमि अरबेलड़ा, जिते ललिता सखी सन्तु ।
 जहिंजो सतिगुरु नवद्वीप में, हुओ महबतियुनि महन्तु ॥
 सतिगुरु जे प्रसाद सां, रस सिद्धिता पाई ।
 कीर्तन में मिठी स्वामिनीअ, जहिंखे साड़ी पहराई ॥
 आयमि उन आश्रम में, मुहिंजा रसीला रसवन्त ।
 संगति सारी सांगु करे, कुरिब कथा जा कन्त ॥
 पुछियाऊँ काथे सन्त हिनि, चयाऊँ नलु था ठहराईनि ।
 जणु ईश्वर रस आकाश मां, भक्ति नीरु लाहीनि ॥
 साहिबनि चयो सेवक खे, करि विनय दरसु दियनि ।
 बटे .बुधाईनि बोलड़ा, जे कृपाल थियनि ॥
 दास वजी वेनती कई, करे चरणनि प्रणामु ।
 चयाई बलिहारी मैं आती हूं, जय जय श्यामा श्यामु ॥
 पोइ त लुदन्दी लोद सां, नूपर छिमकार करे ।
 दर्शनु कयाई साईंअ जो, नीह सां नेण भरे ॥
 अबल बि घणे अदब सां, बई हथिड़ा जोड़े ।
 निउड़त सां निमनु करे, चया वचन विनय बोड़े ॥
 श्रीमान् जी ! हिन आश्रम जा, तवहां ई आहियो महन्त ।
 कहिड़ा सत्संग नेम हिनि, सचु .बुधायो सन्त ॥
 तवहां जो जसिड़ो .बुधी, दर्शन सिक जागी ।
 महाभाग सां था मिलनि, सज्जन अनुरागी ॥

साई साहिब सां कई, सखी सन्त रिहाणि ।
 आश्रम मालिकु सतिगुरु, मां पोरिहयति आहियां पाण ॥
 अजरु अमरु सतिगुरु सच्चो, लाक परलोक धणी ।
 गुप्तु प्रगटु लीलां करिनि, दासनि मुकुट मणी ॥
 विराजमानु मन्दिर में, सतिगुर शेर सुजान ।
 सदां प्रिया प्रीतम जे, मगनु रहनि ध्यान ॥
 सदां सतिगुर वटि थिए, सांझीअ जो सत्संगु ।
 राति जो नाम कीर्तन में, प्रेमियुनि चड़िहे उमंगु ॥
 गुरु नारायण नामु जपे, सभु नचनि ऐं गाईनि ।
 प्रेमी प्रेम प्रमोद सां, सतिगुरु रीझाईनि ॥
 महिमा सतिगुर जी चई, वहाए आंसुनि धार ।
 सनेहु दिसी सत् पुरुष जो, थियो बाबलु बागु बहारु ॥
 साहिबनि पुछियो सन्त खां, तवहां जो असुलु कहिड़ो गामु ।
 सन्त चयो ललिता जो, श्री बरसानो धामु ॥
 असुलु वतनु बृज देशु आ, इष्टु श्री श्यामा श्यामु ।
 सतिगुर चरणनि छांव में, वीर लधुमि विश्रामु ॥
 महिमा सतिगुर शेर जी, आहे अपर अपारु ।
 पाण प्रीतम प्रगटु थिए, श्री सतिगुरु सिरजणहारु ॥
 वेद न लहनि भेदु था, तोड़े महिमा नितु गाईनि ।
 ऋषी मुनी सभु देवता, श्री सतिगुरु साराहीनि ॥
 विहु खे जिनि अँमृत कयो, सो सतिगुरु सूरो ।
 प्रगटु देखारीनि जग में, परमेश्वरु पूरो ॥

कच मंझा कंचनु करे, श्री सतिगुरु सुख धामु ।
 किरड़े खे चन्दनु करिनि, नीहु देई निष्कामु ॥
 किरोड़ जन्म जी कलुषता, हिक लहिजे में लाहींनि ।
 तहिं कृष्णु विहारिनि कछ में, जहिं चितिड़े सां चाहींनि ॥
 दिव्य धाम दीदार सां, दासनि दिलि भरीनि ।
 ततलनि खे पद कल्प जी, छाया मंझि धरीनि ॥
 जो महांगो मुनिवरनि खे, सो सहांगो करे साईं ।
 महानु दान शिरोमणी, गुरुदेव गुसाईं ॥
 कथा सुधा श्रीकृष्ण जी, मुखचन्द्र मां वरषे ।
 गुल्मलता गोलियुनि जो, मनु हिंयड़ो हरषे ॥
 इऐं सतिगुर महिमां चई, सखी रूप में सन्त ।
 वचन . बुधी बाबल मिटे, आनन्द लधा अनन्त ॥
 पोइ सखीअ जे सतिगुर जो, दिलिबर कयो दर्शनु ।
 हुका छिकियाई थे हुब सां, करे चितिड़ो प्रसन्नु ॥
 प्रणामु करे तहिं सन्त ते, गुलिड़ा वरिसाया ।
 साईं सन्तनि राया, घमीं आयमि घर में ॥

० गीतु ०

दयावन्त दानी, मौजूं तूं माणी;
 कुशल तुहिंजो करितारु करे ।
 लाल लासानी, साईं सुख खानी,
 सतिगुरु तोते ढार ढरे ॥

साहिब सचा, रघुवीर ब्रचा,

शील मणी तुहिंजे रंग रचां ।

कृपा सागर, सब गुण आगर,

पलु न कजो मूखे प्यारा परे ॥१॥

अडणि अवहां जे सुखनि जी वरखा,

प्रेमी कतिनि था चाह जा चरखा ।

सुतल जागाई श्री रामु गाराई,

प्यासनि प्याई थो प्याला भरे ॥२॥

श्री मैथिलि मागु में गदिजी घुमो था,

आर्यलि अमडि चरण-गुलिड़ा चुमो था ।

अचलु सुहागु, फले फूले भागु;

ब्राझ सां ब्रेडो पार तरे ॥३॥

दिलि जी दुनियां, तवहां जी वसंदी रहे,

पल-पल प्रीतमु पसंदी रहे ।

सहचरि सियाणी, सखियुनि धयाणी;

युगल जी तो बिन कीन सरे ॥४॥

मैगसिचन्द्र तुहिंजो मुरिकणु मिठिड़ो,

सदाई सुहागु जो सारंगु उठिड़ो ।

सती तूं सुहागिणि, सदां वद भागिणि;

वर जे वसुल जो वारो वरे ॥५॥

६७

मन्दिरु श्री गौर हरि जो, कयो विष्णु प्रिया निर्माणु ।
 तहिंजे दर्शन करण लाइ, आयो साईं शील निधानु ॥
 सोन वर्णो रूपु हो, प्रेम में भिनिड़ा नेण ।
 दिव्य रूपु दर्शनु करे, बालिया अँमृत वेण ॥
 वाह जो रसिक नरेशु आ, शची नन्दनु सुखधामु ।
 विष्णु प्रिया जीवन धनी, आनन्द कन्दु अभिरामु ॥
 महाभाव मस्तीअ में, रतो रहे दीहँ राति ।
 श्री कृष्ण कृष्ण रटिड़ीअ बिनां, ब्री न वाई वाति ॥
 पूर्णु बृज जे रस खे, जहिं जाहिरु कयो जहान ।
 लखायो लोकनि खे, गोपी प्रेमु महान ॥
 मन्दिर मां बि महबत जी, वर्षा थी वरषे ।
 विहण साणु हिन वीर वटि, तनु मनु थो हरषे ॥
 पोइ त प्रेम उमंग सां, सोनी माल्हां देई ।
 पहिरायो गौरचन्द्र खे, चयो साहिब सनेही ॥
 पूजारी प्रसन्नु थिया, दिसी सुन्दरु उपहारु ।
 दासनि भी दिलि में चयो, जानिब जो जैकारु ॥
 वेझो उन मन्दिर जे, हुओ विष्णु प्रिया मन्दिरु ।
 जिति विरिह विकल विष्णु प्रिया, ध्याए गौरु सुन्दरु ॥
 भरिसां शची मायड़ी, वेठी धीरजु धराए ।
 मधुर कथा जे विखंह सां, पुटिड़ी परिचाए ॥

उते आयो घणे उमंग सां, साई संत सुजान ।
 विरिह वेसु दिसी करे, थिया दर्द मगनु दयावान ॥
 ओरीनि ओर अमडि सां, भिजी प्रेम महान ।
 कीअँ निबाहियाई नीहडो, जानिब साणु जहान ॥
 सन्यासी स्वामीअ लाइ, कीअँ सिक में धारियाई ।
 कुशलु चाहे पहिजे कन्त जो, प्रीतिडी पाडियाई ॥
 सजी उमिरि सिकंदी रही, भरे नेण न निहारियाई ।
 परे रही प्रीतम जो, रुगो ध्यानु धारियाई ॥
 सारे जग लाइ सुलभु थियो, निमाई नीह निधानु ।
 पर अगमु थियो पहिजे प्रिया लाइ, देई दुखनि जो दानु ॥
 मिठो मंजियो महबूब जो, दिनलु विछोडो ।
 मिली वरी न विछुडे, सनेहियुनि जोडो ॥
 अठई पहर अनुराग जा, पेई आंसू वहाए ।
 हरे राम हरे कृष्ण जी, रट मिठिडी लाए ॥
 हिकु आनो चांवरनि जो, रोजु ठाकुर खाराए ।
 पाण बि उहो प्रसादडो, मुखिडे में पाए ॥
 कठिनु तपस्या कलियुग में, कई विष्णु प्रिया देवी ।
 निंझ छदे नेणनि जी, नितु भक्ति रस भेवी ॥
 अहिडी तरह अनुराग जे, परीक्षा पासि पेई ।
 जसिडो खटी जहान मां, वरिडे वटि वेई ॥
 जहिंजो जहिं सां जगत में, आहे सत्य सनेहु ।
 सो अवश्य मिलंदो उन सां, नाहे कुछु सदेहु ॥

इहा सत्य सनामन रीति आ, वेदनि में वर्णनु ।
प्रेमी पहुँचे अवश्य थो, प्रीतम जे चरणनि ॥
श्री विष्णु प्रिया खे ध्यान में, वर सां मिलाए ।
साईं अमड़ि सनेह सां, खीरणी खाराए ॥
पोइ संगति सांगु गढ़िजी, घुमंदा आयमि घरि ।
हर्षनि भरियो हरि, साईं साहिबु सिन्धु जो ॥